ग्रीन रिवोल्ट

हरित नीरा रहे वसुंधरा

रविवारीय 12-17 अगस्त 2019, संस्करण-1, अंक -1 | हिन्दी साप्ताहिक | R.N.I. No. JHAHIN 00962 | कुल पृष्ठ 4 | मूल्य 2 रूपये

पेज 2
भविष्य तो इलेक्ट्रिक वाहनो का ही होगा

समस्त झारखंडवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की ग्रीन रिवोल्ट साप्ताहिक समाचार पत्र परिवार की ओर से असीम शुभकामनायें

कम बारिश, अतिक्रमण, प्रदूषण, जहां तहां अवरोध और लापरवाही से रांची आस पास की सभी नदियों के अस्तित्व पर है संकट

कांके डैम की एकमात्र जलस्त्रोत नदी भी विलुप्ति के कगार पर

हरमू नदी बचाने के शोर में रांची की अन्य नदियों की दुर्दशा पर नहीं है किसी की नजर

मनोरंजन सिंह

रांची : कांके डैम जो राजधानी रांची की बहुत बड़ी आबादी को जलापूर्ति करता है। उसके एक प्रमुख नदी जलस्त्रोत पर विलुप्ति का खतरा है।

लंबे समय से हरमू नदी को बचाने और संवारने का शोर किया गया है लेकिन करोड़ो खर्च करने के बाद भी नदी पहले की तरह ही प्रदूषित है।उससे भी बुरी हालत सिमलिया से निकल कर कमड़े आश्रम, पंडरा बस्ती से होकर कांके डैम में मिलने वाली इस बेनाम नदी का भी है। कमड़े आश्रम के बाद नदी के कैचमेंट क्षेत्र में ही मकान बना लेने, जहां तहां उसे बांध देने के कारण यह गंदे नाले का रूप ले चुकी है।गांव से होकर रांची में प्रवेश करने वाली यह नदी पहले सालो भर जीवित रहती थी, अब बरसात के मौसम में भी इसमें पानी नहीं रहता है। कुछ दिनों पहले पंडरा बस्ती में इसके किनारे गरीबों के लिये आवास बनाने का एलान हुआ, लेकिन बस्ती के लोगों ने इसका जोरदार विरोध किया। उनका कहना था कि, नदी के किनारे सैकड़ो आवास बनने से पहले से ही लुप्तप्राय नदी का अस्तितत्व और संकट में पड़ जायेगा। सीवर, नाले इसी में बहाये जायेंगे।जबकि ग्रामीणों का पूजा स्थल इसी नदी के किनारे है और अनाज सूखाने के अलावा कई धार्मिक आयोजन भी यहीं होते हैं।

पंडरा पूल के पास अतिक्रमण और प्रदूषण के कारण नदी एक गंदे नाले के शक्ल में दिखती है और मुहल्ले में कई जगहों पर नदी को बांध कर रास्ता बना लिया गया है इस कारण से इसका बहाव रूक गया है कम बारिश के कारण कभी हमेंशा बहने वाली यह नदी दलदली नाले सी दिखती है।

कमड़े आश्रम के पास से इस तरह से बहती है नदी

पंडरा पूल के पास आकर नदी एक नाली बन जाती जाती है

सड़क निर्माण सें निकले मलबे को पंडरा पूल के नीचे नदी में हीं डंप करने से नदी पर आया संकट।
महादेव लोहरा

इसके किनारे पतमौना बस्ती में पूजा का आयोजन करते हैं अब साल दस साल नदी सिकुड़ रही है।
जनक

जहां तहां अतिक्रमण कर नदी के जमीन में हीं मकान बना लिया गया है, कोई देखने वाला नहीं
रोहित मुंडा

कांके डैम के अधिकतर जलस्त्रोत हुये गायब

कभी कांके डैम में छह बरसाती नदियां मिलती थी इनमें से पांच बरसाती नदियां अब खत्म हो चुकी हैं। इन नदियों को भर कर उन पर घनी रिहायशी कॉलोनियां बस चुकी हैं। पिस्का मोड़ से आगे पंचशील नगर ऐसी ही एक नदी को भर कर उसी पर बसा हुआ है। इसका खामियाजा भी यहां के बाशिंदे भुगतते हैं। बरसात में पंचशील नगर का एक बड़ा हिस्सा जलमग्न हो जाता है।

सरकारी दावे के अनुसार क्या सचमुच झारखंड में हुआ है वनक्षेत्र में विस्तार?

राजन कुमार

रांची:फॉरेस्ट सर्वे ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रकाशित नवीनतम भारतीय स्टेट ऑफ़ फॉरेस्ट रिपोर्ट के अनुसार,झारखंड के सभी जिलों में वन क्षेत्रों में वृद्धि हुई। यह वृद्धि शहर में तेजी से शहरीकरण और विकास के बावजूद हुई।

2015 के बाद से रांची ने अपने वन क्षेत्र में 10 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि की, उनके लिए एन डी देखभाल की प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। केवल पेड़ लगाने और इसके बारे में भूल जाने के बजाय, सरकार के पास एक दीर्घकालिक नीति होनी चाहिए, ताकि लगाए गए पेड़ों की देखभाल तब की जाए जब वे दो तीन वर्षों में विकसित होने लगें। अगर कोई अनुवर्ती नहीं है, तो पेड़ लगाना एक औपचारिकता है।

रांची के जानेमाने पर्यावरणविद प्रियदर्शी ने सरकारी आंकड़ों को खारिज कर दिया।और वनों की कटाई के स्पष्ट दुष्प्रभावों को इंगित किया। "तापमान में वृद्धि, जल संकट, पड़ोसी क्षेत्रों में मानव-पशु संघर्ष, जंगलों के इस बढ़ते परिणाम के सभी परिणाम हैं।" उन्होंने समस्या से निपटने के कई तरीके सुझाए। सार्वजनिक जागरूकता, सख्त सरकारी नीति, बंजर भूमि की खेती सभी लाभकारी कदम हैं," उन्होंने कहा। ''हम मेघालय के पवित्र वनों के उदाहरण का भी अनुसरण कर सकते हैं, जहाँ स्वदेशी की धार्मिक मान्यताओं के कारण जंगल के पेड़ों को छोड़ने की अनुमति नहीं है।अगर सरकारी आंकड़ों को छोड़ कर आंखों देखी हकीकत की बात करें तो ज्यादतर जगहों पर घने वन कम हुये हैं। अतिक्रमण, वनो की कटाई और माइनिंग के कारण वन घटे ही हैं।

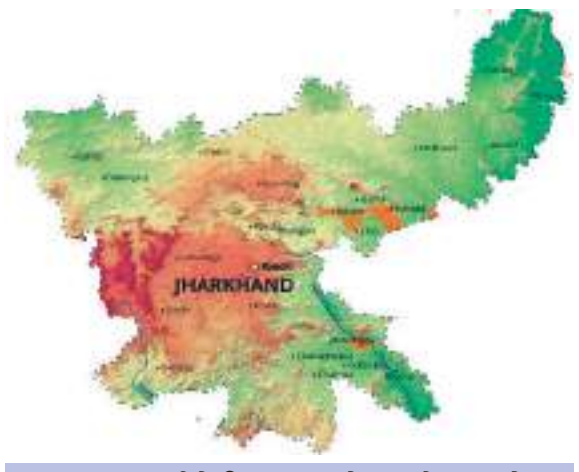

एक तथ्य यह भी है कि उपग्रह से वन क्षेत्र मापने पर अरहर जैसी फसलों के खेत भी भी वन क्षेत्र में दर्ज हो जाते हैं इससे गलत आंकड़े प्रापत होते हैं। जबकि वास्तविकवन भूमि इससे कम होता है।

वहीं वन विभाग के आंकड़ों की मानें तो , पिछले कुछ वर्षों में शहर का वन क्षेत्र बढ़ गया है। रिपोर्ट के अनुसार, रांची में वर्तमान में 63 वर्ग किमी घने वन और 364 वर्ग किमी में मध्यम घने वन और 737 वर्ग किमी हरियाली वाले क्षेत्र हैं।

छह महिने में भी नहीं बनी डेढ किमी सड़क

रांची : एक तरफ तो सरकार विकास के बड़े बड़े दावे कर रही है वहीं दूसरी ओर रांची में महज डेढ किमी की सड़क बनाने का काम तकरीबन पांच महिनों में भी पूरा नही हो सका। पिस्का मोड़ से पहले देवी मंडपरोड की सड़क के दोनो ओर नाली बनाने और कालीकरण का काम मार्च में प्रारंभ हुआ था। फरवरी में सड़क बनाने का शिलान्यास हो गया था और शिलापट्ट भी लगा दिया गया था। वर्तमान में अभी तक नाली बनाने का काम भी पूरा नहीं हो सका है। देवी मंडप रोड एक घनी आबादी वाला ईलाका है और इसमें दर्जनों स्कूल बस आते हैं। लंबे समय से सड़क निर्माण होने के कारण जहां तहां गड्ढे खोद दिये गये हैं, इस कारण से सड़क संकरी हो गयी है। खुदाई के कारण जहां तहां पाइप भी कट जा रहे हैं जिससे जल की बर्बादी भी हो रही है। अब सवाल है कि काम होंगे तो कुछ परेशानियां भी होंगी ही, लेकिन डेढ किमी की सड़क को बनाने में आखिर ये अंतहिन समय क्यों?

जानकारों की मानें तो अभी नाली बनाकर सड़क के कालीकरण में तकरीबन तीन महिने और लग सकते हैं।

जुलाई तक सिर्फ साहेबगंज में हुयी थी पर्याप्त बारिश, झरने और नदियां सावन में रही सूखी

अगस्त ने कर दी मॉनसून रिकवरी वर्ना राज्य में किसान होते बदहाल

रांची : भले देश भर से बारिश के कहर की खबरें हम सुन रहे हैं। बेंगलुरू मुंबई भी बारिश से हलकान है, पर झारखंड में किसान जुलाई महिने तक आसमान की ओर टकटकी लगाये हुये थे। बारिश नहीं होने से धान के बिचड़े सूख जाने पर एक किसान ने आत्महत्या कर ली।एक दुखद आंक्ड़ा ये भी है कि पिछले एक दशक में साल दर साल मॉनसून की बारिश झारखंड में घटती ही गयी है। हर साल मॉनसून के सामान्य रहने की भविष्यवाणी की जाती है, पर झारखंड में किसानों को मायूसी ही हासिल होती है। शायद इसी लिये भारत में कृषि को मॉनसून के साथ जुआ कहा गया है।

आंकड़े बता रहे हैं कि, अगस्त के पहले तक झारखंड में 37 प्रतिशत कम बारिश हुयी थी। देर से मॉन्सून के आने की वजह से कई जिलों में बारिश न होने से सूखे जैसी बनी रही। खूंटी जिले में सबसे कम बारिश हुयी है। इसे बाद सारी आस अगस्त में अच्छी बारिश की भविष्यवाणी पर टिकी हुयी थी। अगर अगस्त में भी मॉनसून ने धोखा दिया दिया होता तो झारखंड पूरी तरह से सूखे की चपेट में होता। रांची में सावन महिने में छिटपुट बारिश का ही दीदार हुआ था। राजधानी के आस पास के सारे नदी तालाब जल विहीन हैं। झरनों से बारिश के मौसम में गिरते जल का हाहाकार सुनाई नही दे रहा। और

इसकी सबसे ज्यादा मार अगले वर्ष की गर्मियों में पड़ेगी जब जल संकट और गहरायेगा।राज्य में 18 लाख हेक्टेयर में धान की खेती होती है, अगस्त के पहले सप्ताह तक महज साढे चार लाख हेक्टेयर खेतों में धान की खेती संभव हो पायी थी।

झारखंड की मुख्य फसल धान है और रोपा के सीजन में मजदूर तक बाहर से अपने गांव आ जाते हैं। और इस बार मॉनसून के शुरूआती गच्चे से झारखंड के किसान इंददेव के रहमो करम पर हैं।राहत की बात ये रही कि, अगस्त के पहले सप्ताहांत में रांची में इंद्रदेव ने कुछ कृपा की और बाारिश हुई। इसके बाद रूक रूक कर हो रही तेज बारिश ने किसानों के मायूस चेहरे पर थोड़ी मुस्कान ला दी है। और अब ऐसा लग रहा है कि राज्य में सामान्य मॉनसून रहेगा।

सावधानी

जंजाल है पार्थेनियम,इसका समूल नाश करें

पार्थेनियम एक खतरनाक झाड़ी है, जो बरसात का मौसम शुरू होते तेजी से फैलने लगती है। इसे गाजर घास भी कहते हैं। यह वर्तमान में विश्व के सात सर्वाधिक हानिकारक पौधों में से एक है तथा इसे मानव एवं पालतू जानवरों के स्वास्थ्य के साथ-साथ सम्पूर्ण पर्यावरण के लिये अत्यधिक हानिकारक माना जा रहा है।

अमेरिका से गेहूं आयात में पार्थेनियम आया भारत

अर्जेन्टीना, ब्राजील, मैक्सिकों एवं अमरीका में बहुतायत से पाए जाने वाले इस पौधे का कृषि मंत्रालय और भारतीय वन संरक्षण संस्थान के सर्वेक्षण के अनुसार भारत में पहले कोई अस्तित्व नहीं था। ऐसा माना जाता है, कि इस घास के बीज 1950 में अमरीकी संकर गेहूँ पी.एल.480 के साथ भारत आए। इसे सर्वप्रथम पूना में देखा गया। आज यह घास देश में लगभग सभी क्षेत्रों में फैलती जा रही है।

झारखंड भी है बुरी तरह से पार्थेनियम की चपेट में

झारखंड में भी सर्वत्र इसका फैलाव दिखता है। जहाँ कहीं भी पानी की थोड़ी भी अधिक मात्रा होती है, वहाँ ये अपने पैर जमा लेती है। इसने चरागाहों को पूरी तरह ढक लिया है और खाली पड़े मैदान के मैदान अपने चपेट में ले लिये हैं।इसके परागकण वायु को दूषित करते हैं इसकी उपस्थिति में

अन्य पौधे भी नष्ट हो जाते हैं।पार्थेनियम मनुष्यों में एलर्जी का मुख्य कारण है। दमा, खाँसी, बुखार व त्वचा के रोगों का कारण भी यही पदार्थ है।पशुओं के लिये भी यह घास अत्यन्त हानिकारण है। यदा-कदा घास की कमी होने से जो पशु इसे खाते हैं, उनका दूध कड़वा एवं मात्रा में कम हो जाता है।

पार्थेनियम से छुटकारे के उपाय

यदि इसे जड़ से उखाड़कर आग लगा दी जाए, तो शायद किसी सीमा तक इससे छुटकारा मिल सकता है। इसे हाथ से न छुआ जाए। अन्यथा एलर्जी एवं चर्म रोग होने का खतरा हो सकता है। इसकी झाड़ी को अगर झटके से उखाड़ा या काटा जाये तो, इसकी बीज चारो ओर फैल जाते हैं,और तेजी से पनप कर फिर से फैलने लगते हैं।

E ZONE CARE

Software Problem, Motherboard Chip-Level Repair, Laptop AC Adapter Repair and Replacement, Laptop LCD Screens Repair and Replacement, Dead Laptop Problems,
No Display Problem, LCD Dim Display Problem, LCD White Display Problem, BIOS Password Problem, all type of Laptop repair and servicei

• Repair your laptop with 3-month warranty
info@ezonecare.in, ezonecare.in
Rospa Tower 3RD Floor, Main Road, ranchi
93108 96575, 70047 69511
Mon - Fri 10:30 am - 7:00 pm, SunDAY Closed

चेतना है जरूरी

दशक भर पहले तक भारत में कहा जाता था कि, यहां पर्यावरण कभी चिंता का विषय नही बनता। ये एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होती है कि एक विकासशील देश में पर्यावरण, प्रदूषण, वन संरक्षण कभी मुद्दा नहीं बनता। जनता खुद की जरूरतों में हीं परेशान रहती है। पहले उपहास में लोग कहा करते थे कि, हवा भी बिकेगी? आज स्थिति है कि चीन में शुद्ध हवा की बिक्री की जा रही है। जापान में ट्रैफिक पुलिस के लिये सड़कों के किनारे ऑक्सीजन चैंबर बनाये गये हैं ताकी ट्रैफिक पुलिसकर्मी वाहनों के धुओं से फेफड़े के भर जाने के बाद कुछ मिनट तक इन चैंबरों में शुद्ध हवा प्राप्त कर सकें। दो साल पहले दिल्ली में वायू प्रदूषण के कारण धुंध इतनी हो गयी थी कि भारत श्रीलंका के बीच मैच रोकना पड़ा था। प्रदूषण और ताप को सोखने वाले जंगल सिमट रहे हैं, प्रतिवर्ष मॉनसून में बारिश कम होती जा रही है। शहरों में उन नदियों को अतिक्रमित कर दिया गया है या गायब ही कर दिया गया है जो अतिवृष्टी में जलनिकासी का काम करती थीं।आज इसी कारण मुंबई, चेन्नई जैसे महानगर भी बारिश में बाढ़ग्रस्त हो जाते हैं।झारखंड में भीषण गर्मी,जलसंकट,कम बारिश का संकट झेलने के बाद राज्यवासियों में अब पर्यावरण के प्रति सजगता बढी है।आम लोगों,सरकारी विभागों, संगठनों में भी पेड़ लगाने उसे सोशल मीडिया में प्रचारित करने की प्रवृति देखने को मिल रही है। भले इनमें ज्यादतर रस्मि तौर पर ही हों, पर ये बदलाव सराहनीय है। राज्य में पहले जो नदियां सदा नीरा रहती थीं वो अब बरसात के मौसम में भी नहीं उफनती। जिस रांची में कुछ दशक पहले चेरापूंजी से भी ज्यादा बारिश हुई थी, उसी रांची में इस वर्ष जुलाई अंत तक पचास प्रतिशत बारिश भी नहीं हुयी थी। कई झरने अप्रैल में ही सूख जा रहे हैं। अगर हम अब भी न चेते तो ये स्थिति और भयावह हो सकती है।

> कुछ वर्षों पहले तक हमारे देश में पर्यावरण, वन संरक्षण, प्रदूषण पर अंकुश जैसे विषय कभी चिंता की बात ही नहीं होते थे। वहां आज अगर पेड़ लगा कर उसे जताने का चलन बढ़ा है तो भी ये एक सुखद बदलाव है।

दुसरी ओर बगैर जानकारी व ठोस प्लान के सौंदर्यीकरण के प्रयास से राजधानी रांची में ही कई तालाबों नदियों का अस्तित्व खत्म हो चुका है या उन पर संकट है। ग्रीन रिवोल्ट के माध्यम से हमारा यह छोटा सा प्रयास है कि, आम जन पर्यावरण, प्रदूषण, जल संरक्षण, वन संरक्षण के प्रति सजग हो ।

जीव अधिकार क्यों नहीं?

आज का लोभी और सुविधाभोगी मनुष्य समाज और कानून द्वारा स्थापित आदर्शों की हत्या करता है और पुनः अपनी रक्षा के लिए उसी समाज और उसी कानून का हवाला देता है। हाथी गणेश का रूप है, गणेश की पूजा की जाती है, धन कमाने और जीविका चलाने के लिए हाथि की हत्या भी की जा सकती है। कहीं हत्यारे मनुष्यों के मस्तिष्क में ऐसी बातें तो नहीं कि गणेश का सृजन मनुष्य ने किया है, धर्म मनुष्य ने बनाया है, देवताओं और भगवान की रचना मनुष्य ने की है। अतः मनुष्य आवश्यकता पड़ने पर पूर्व स्थापित धार्मिक और सामाजिक नियमों में परिवर्तन भी कर सकता है। यदि ऐसा है तो व्यापक अर्थों में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है। धर्म, अहिंसा, नैतिकता, सच्चाई, ईमानदारी जैसे शब्दों को मनुष्य ने बनाया है इसलिए मनुष्य जब चाहे इन शब्दों का अर्थ बदल दे, इनसे संबंधित आदर्शों को माने या न माने। सब कुछ उसकी अपनी मर्जी पर निर्भर है, सब कुछ उसके अधिकार (मानवाधिकार) के अंतर्गत जायज है। ऐसी स्थिति में किसी भी कर्म, कुकर्म या दुष्कर्म को जीवित रहने के मौलिक अधिकार एवं मानवाधिकार द्वारा संरक्षण प्राप्त हो सकता है। मनुष्य के पास अधिकार है और जानवरों के पास कोई अधिकार नहीं है। तभी तो आज मानवाधिकार आयोग है और जंतु अधिकार आयोग नहीं है। तो क्या मनुष्य जंतु या जानवर नहीं, कुछ और है? प्रकृति में दो ही श्रेणियां हैं- जीव और निर्जीव, जीव दो प्रकार के हैं- जंतु और वनस्पति। मनुष्य को किस श्रेणी में रखा जाये? मनुष्य की जबरदस्ती और एकाधिकार शाश्वत नहीं हो सकते। प्रकृति के अपने कानून और कायदे हैं। जानवरों की हत्या करने वाले, उन पर क्रूरता करने वाले प्राकृतिक नियमों और कानूनों को तोड़ते हैं, अपराध करते हैं और प्रकृति देर-सबेर इन सब अपराधों का हिसाब अवश्य लेगी।

डॉ. मंगला प्रसाद मिश्र

> एक रिपोर्ट में बताया गया था कि अकेले दिल्ली शहर में ऐसे 120 व्यापारी रहते थे जिनके पास उस समय लगभग 300 करोड़ रूपये मूल्य के हाथी के दांत पाये गये थे। वाइल्ड लाइफ सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा जब ऐसे व्यापारियों पर दिल्ली उच्च न्यायालय में मुकदमा दायर किया गया तो उन व्यापारियों ने अपना पक्ष इस प्रकार रखा था। जीवित रहने का अधिकार हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। हाथियों के दांतों का व्यापार करके वे अपनी जीविका कमाते हैं। उनके इस व्यापार पर यदि न्यायालय प्रतिबंध लगाता है तो यह उनके जीवित रहने के मौलिक अधिकार का हनन और भारतीय संविधान के प्रावधानों का उल्लंघन होगा। दिल्ली उच्च न्यायालय ने 20 मार्च 1997 को उनके प्रतिवेदन को रद्द करते हुए यह टिप्पणी की थी। हाथियों के दांतों को काटना, उनका व्यापार करना अथवा हाभि-दांत से बनी किसी वस्तु को रखना अपराध है। अपराध करना मनुष्य का मौलिक अधिकार नहीं हो सकता।

जानवर जीवन-श्रृंखला के अभिन्न अंग हैं और उनका जीवन हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है। यदि हम उनके जीवन को क्षति पहुंचाते हैं तो हमारा अपना जीवन भी सुरक्षित नहीं रह सकेगा। उस समय कोई मानवाधिकार आयोग हमें शरण नहीं देगा। हमारे सारे अधिकार धरे रह जायेंगे।

मनुष्य अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कुछ भी कर डालता है। प्राचीन काल से ही वह प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करने और सब कुछ अपने हिसाब से बदल डालने का आदी रहा है। अपनी इच्छापूर्ति के लिए दूसरे जानवरों को मार डालना या उन्हें कष्ट देना और उन्हें अधिकार विहीन समझना उसकी पुरानी आदत रही है, जो आधुनिक समय में अधिक मजबूत हुई है। खुद आराम से रहना, सुविधायें भोगना और विलासिता करना वह अपना अधिकार समझता है, परंतु अपनी इच्छओं की पूर्ति के समय दूसरे प्राणियों की सुविधाओं और अधिकारों की अनदेखी करता है।मनुष्य स्वार्थ के लिए जानवरों को एक गांव से दूसरे गांव एक शहर से दूसरे शहर और एक देश से दूसरे देश तक विभिन्न परिवहन माध्यमों से ले जाता है।

एक बार ओरमांझी में 4 भैंसों को रखने की क्षमता वाले ट्रक के उलट जाने पर जब पता किया गया तो मालूम हुआ कि उसमें कुल 25 भैंसों को लादा गया था जिनमें से 12 भैंसों ने घटनास्थल पर ही तड़प-तड़प कर दम तोड़ दिया था। उस ट्रक में 25 भैंसों को किस तरह घुसाया गया होगा और मानपुर (उप्र) से यहां तक का सफर कितना कष्टदायक रहा होगा इस-की कल्पना कीजिए। क्या क्रूरता की इससे भी बड़ी मिशाल आपने सुनी और देखी है? क्या भैंसों के खरीदार व्यक्ति को उस हाल में कानुपर से ओरमांझी तक खुद सफर करना पड़ता तो ऐसा संभव था? क्या कानून की रक्षक पुलिस जो रिपोर्ट तक दर्ज नहीं करना चाहती थी, इस देश के कानूनों से अनभिज्ञ है? आखिर कौन सी लाचारी है जो मनुष्य को नैतिकता खोने पर मजबूर करती है।

सावन खत्म तो क्या आप मांसाहार पर टूट पड़ेंगे?

पूरे सावन मांसाहार से दूर रहकर शिवभक्ति में लीन रहने वालों को सावन समाप्ति के बाद एकाएक मांसाहार पर टूट पड़ते देखा जा सकता है। मांसाहार करने वालों के लिये सबसे स्वादिष्ट मांसाहारी व्यजंन ही होते हैं। आस्थावश उन्हें अपने जीभ पर एक महिने तक संयम रखना होता है।संयम की वजह यह है कि धार्मिक ग्रंथों में सावन माह को विशेष स्थान प्राप्त है और इसे सर्वाधिक पवित्र महीना माना जाता है।

शराब और मांसाहार को धर्म की दृष्टि से तामसिक वर्ग का माना जाता है। इसीलिए धार्मिक दृष्टि से इस परम पवित्र माह में तामसिक आहार किसी संक्रामक रोग से ग्रस्त पशु का मांस खाने से मनुष्य का बीमार पड़ना स्वाभाविक है। आयुर्वेद में भी इस बात को स्वीकार किया गया है कि बारिश के दौरान मांस में संक्रमण बहुत जल्दी होता है। इसका एक कारण यह भी है कि इस मौसम में कीट पतंगे एकदम से सक्रिय हो जाते हैं। इनके खाद्य पदार्थों पर बैठने से भी संक्रमण फैलता है, जो मांसाहारियों को जल्दी बीमार कर सकता है।वर्षाकाल अनेक पशु-पक्षियों का प्रजनन काल होता है। इस मौसम में अनेक पशु- पक्षी, जलीय जीव गर्भ धारण करते हैं। हिंदू शास्त्रों में गर्भित शिशु की हत्या को पाप माना गया है। यदि इस मौसम में मांसाहार ग्रहण किया जाए, तो यह तय करना मुश्किल है कि मांस गर्भित पशु का तो नहीं है।

> वैज्ञानिक नजरिये से देखें तो वर्षा ऋतु में सावन के बाद भी मांसाहार जितना कम करें उतना ही अच्छा

बारिश का महीना सभी जीवों के फलने-फूलने के लिए बनाया गया है। ऐसे में यदि गर्भवती मादा की ही हत्या हो जाए, तो नए जीवों के जन्म लेने की संभावना ही ना रहेगी। इसीलिए जीवों की रक्षा के उद्देश्य से सावन में मांसाहार को त्याज्य माना गया है। विज्ञान भी मानता है कि इस मौसम में पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है। ऐसे में व्रत आदि के द्वारा भोजन पर संयम रखकर अपने स्वास्थ्य को ठीक रखना आसान हो जाता है।हैं। यदि आप धार्मिक नहीं भी हैं तो भी इन आसान नियमों का पालन कर शारीरिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं।

सावन के बाद भादो का आगमन होता है और इस महिने में भी घनघोर बारिश होती है। गावों में तो कहावत है कि सावन से दुब्बर भादो? मतलब भादो कहीं से भी सावन से कम नहीं होता। ऐसे में सावन खत्म होने के बाद भी भादो तक यह प्रयास करना चाहिये कि, मांसाहर न करें।

भारत पेड़ लगाने में सबसे आगे:नासा

पेड़ लगाने को लेकर नासा ने इस साल एक रिसर्च जारी की थी जसमें दावा किया गया है कि भारत और चीन पेड़ लगाने के मामले में विश्व में सबसे आगे हैं। रिसर्च में कहा गया है कि दुनिया 20 वर्ष पहले की तुलना में अब अधिक हरी-भरी हो गई है। इस अध्ययन के लेखक ची चेन ने कहा, 'एक तिहाई पेड़-पौधे चीन और भारत में हैं, लेकिन ग्रह की जंगल से ढकी भूमि का नौ प्रतिशत क्षेत्र ही उनका है।बॉस्टन विश्वविद्यालय के चेन ने कहा, 'अधिक आबादी वाले इन देशों में अत्यधिक दोहन के कारण भू क्षरण की आम अवधारणा के मद्देनजर यह तथ्य हैरान करने वाला है। और ज्यादतर लोग इस पर भरोसा नहीं कर पायेंगे।

ये कार्टून बहुत कुछ कह रहा है। केवल एयर प्यूरिफ़ायर्स और मास्क के इस्तेमाल से समस्या हल नहीं होगी। चीन के बीजिंग शहर ने उत्सर्जन मानकों को और कड़ा किया है, कारों की संख्या घटाई है, डीज़ल कारों पर रोक लगाई है और आपात कार्रवाई की है। आज से सात साल पहले सिर्फ दिल्ली में बीमार फ़ेफ़ड़ों वाले बच्चों की बड़ी तादाद मिली थी।अंदाजालगा सकते हैं कि आज क्या हालत होगी। सर्दियों में सालाना अस्पतालों के इमरजेंसी वार्ड में सांस की तकलीफ़ से जुड़े अनुपात से ज़्यादा मामले आते हैं।सरकार के ईंधन पर सब्सिडी का मतलब है, अधिक डीज़ल गाड़ियों की ख़रीद। वहीं आज भी भारतीयों के पास पैसा आते हीं उनकी पहली इच्छा किसी बड़ी और महंगी कार या एसयूवी खरीदने की होती है।

भविष्य तो इलेक्ट्रिक वाहनों का ही होगा

छोटे और मध्यम आकार की इलेक्ट्रिक कारों के आने से मध्य वर्ग को पेट्रोल खर्च, ध्वनि और वायू प्रदूषण से मिलेगी निजात

पिछले महिने ह्यूंडाई मोटर इंडिया ने अपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी कार ***कोना*** लांच कर दी है। संभव है कि अगले कुछ सालों में महिंद्रा से लेकर सभी बड़ी कंपनियां इलेक्ट्रिक कारें लांच कर देंगी। पेट्रोल डीजल की बढती कीमत और प्रदूषण से निजात के लिये जरूरी भी है।

हयूंडाई कंपनी का दावा है कि एक घंटे की चार्जिंग में इसकी 80 पर्सेंट बैटरी चार्ज हो जाएगी। इसके लिए इसको फास्ट चार्जर से जोड़ना होगा। नॉर्मल एसी पॉइंट में कनेक्ट करने में यह लगभग 6 घंटे का वक्त लेगी। फिलहाल इस एसयूवी को पूरे देश में नहीं बेचे जाने की योजना है। कंपनी ने इसको दिल्ली, मुंबई सरीखे चुनिंदा शहरों में बेचने का फैसला किया है।

कोना इलेक्ट्रिक एसयूवी 9.3 सेकंड्स में 0 से 100 किलोमीटर प्रति घंटा की स्पीड पकड़ सकती है। बताया जाता है कि इसकी बैटरी एक बार में फुल चार्ज होने पर 300 किलोमीटर तक चल सकती है। इसकी टॉप स्पीड 167 किलोमीटर प्रति घंटा है। इस इलेक्ट्रिक कार को एयरोडायनैमिकली डिजाइन किया गया है।

पहले भी भारत में बैटरी चलित स्कूटरों एवं मोटरसाकिलों कों को लांच किया गया, पर वह बुरी तरह से असफल रहीं। यहां की ट्रैफिकयुक्त सड़कों पर बैटरी वाले दोपहिया वाहन अनुकूल साबित नहीं हुये और एक छोटे समय के लिये धूम मचा कर ये कंपनियां गायब हो गयीं। लोगों की शिकायत इनके टॉर्क से लेकर चार्जिंग तक में थी। इसके पीछे एक वजह ये रही कि, बैटरी चलित दोपहिया वाहनों के बाजार में किसी बड़ी या प्रतिष्ठित कंपनी ने तब हाथ नहीं आजमाया। और जिन कंपनियों ने इन्हें लांच किया उन्होंने भारतीय सड़कों ट्रैफिक और जरूरतों के हिसाब से इसकी टेस्टिंग नही की। हाल में कुछ बड़ी और नामी कंपनियों ने बैटरी चलित दोपहिया वाहनों के क्षेत्र में काम किया है और संभव है कि अगले कुछ सालों में ये कंपनियां पेट्रोल चलित वाहनों की तरह ही टेस्टेड और विश्वसनीय बाइक और स्कूटी भारतीय सड़कों पर उतारें।

इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों में सबसे जरूरी चीज होगी कि, हल्की आवाज वाली कोई मशीन लगायी जाये। बिल्कुल ही शांत और स्पीडी इलेक्ट्रिक वाहन दुर्घटना का कारण भी बन सकते हैं। ई रिक्शा के शुरूआत पर कई विवाद हुये थे। इसकी टक्कर से एक बच्चे की मौत पर मामला कोर्ट तक गया। जहां ये दलील दी गयी कि इसके शांत होने से आने का अहसास नहीं होता लोग सजग नहीं हो पाते और टक्कर हो जा रही है। हालांकि कोर्ट ने ई रिक्शा को प्रदूषण रहित मान कर इस पर बैन लगाने से इनकार कर दिया था।

इलेक्ट्रिक वाहन भारत के लिये वरदान साबित होंगे। देश पेट्रोलियम जरूरतों के लिये अरब पर निर्भर है। सिर्फ भारी वाहनों और सेना की जरूरतों के लिये पेट्रोल डीजल की आवश्कता रह जाये तो उसकी आपूर्ति लायक ईंधन देश में हीं प्राप्त हो जायेगा। फिलहाल जो इलेक्ट्रिक कारें लांच हुयी हैं उनकी कीमत आम मध्यवर्ग के वश में नहीं है। लेकिन हम ये उम्मीद कर सकते हैं कि अगले कुछ सालों में बैट्रीचलित छोटी और मंझौली कारें भी आम लोगों के लिये उपलब्ध हो जायेंगी।

पंछी को कैद में रखना प्रेम नहीं

कुछ साल पहले रांची विस परिसर में नियुक्त एक गार्ड ने पेड़ पर डालियों में फंसे एक बगुले को छटपटाते देखा तो वह जान की परवाह किये बगैर उस ऊंचे पेड़ पर चढ गया और डालियों में फंसे उस पक्षी को छुड़ा कर आजाद कर दिया। तब यह खबर टीवी चैनलों तक में दिखाई गयी। दूसरे वाकये में हजारीबाग में डैम के शैवाल और लताओं में फंसे एक साइबेरियान बत्तख को एक पुलिसकर्मी ने देखा तो उसने किसी स्थानीय तैराक लड़के को डेढ सौ रूपये दिये और उसने तैर कर उस बत्तख को छुड़ा दिया। दोनो वाकये बताते हैं कि, आम लोगों में जीवों के प्रति दया होती है। वहीं तब रांची के कांटाटोली चौक पर या सड़कों पर छोटे छोटे पिंजड़ों में नीरीह पक्षियों को बेचते देख यह अहसास भी होती है कि पैसों के लिये आदमी दूसरे जीवों पर क्रूरता कर रहा है, अत्याचार कर रहा है।

देबाशीष

पिंजरा एक छोटी सी जेल है जिसके भीतर किसी निर्दोष और असहाय प्राणी को जबरन बंद करके रखा जाता है। अपनी खुशी या स्वार्थ के लिए पंक्षियों को पिंजरों में बंद रखना किसी प्रेम का परिचायक नहीं हो सकता। हां, इस बात का संबंध किसी विकृत स्वार्थ से उत्पन्न उच्च स्तरीय क्रूरता से अवश्य हो सकता है। निरीह वन्य पक्षियों को कपट से फंसाना, उन्हें पिंजरों में ठूंस-ठूंस कर भरना और फिर उन्हें बाजारों में ले जाकर बेचना उस क्रूरता की पराकाष्टा है, जो प्राचीन काल में ही संभवतः पिंजरे की रचना से पहले ही जन्म ले चुकी थी। दूर नहीं, अपने ही शहर में दिनों-दिन बढ़ती हुई इस क्रूरता को आप हर दिन देखते हैं और खामोशी से गुजर जाते हैं। कहीं किसी प्रकार से आप भी क्या इसमें शामिल नहीं हैं? वन्य पक्षी, ऐसे पक्षी हैं जिन्हें वन्यजीवन (संरक्षण) अधिनियम 1972 के अंतर्गत रखा गया है। इस अधिनियम के अंतर्गत अनुसूची एक और अनुसूची दो में दर्ज की गयी विभिन्न पक्षी प्रजातियों को भारत सरकार द्वारा कानूनी संरक्षण किया गया है।

वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम की धारा-9 के अंतर्गत वन्य पक्षियों का शिकार करना संज्ञेय अपराध है। शिकार का तात्पर्य पक्षियों को कपट प्रबंध द्वारा पकड़ना, पिंजरों में बंद करना, बेचना अथवा उन्हें मार डालना-होता है। पुनः इसी कानून की धारा 57 के अंतर्गत किसी भी पक्षी को पिंजरे में रखना अथवा अन्य प्रकार से उसे नियंत्रण में रखना कानूनी अपराध है। अतः पिंजरों में रखकर पक्षियों को बाजरों में बेचना कानून की दृष्टि में अपराध है और ऐसे अपराधी व्यक्ति के लिए तीन वर्ष की जेल और 25,000 रूपया के जुर्माने का प्रावधान किया गया है।

शिकार को कानून की नजर में गंभीर अपराध माना जाता है और पक्षियों की खरीद-बिक्री को भी इसी श्रेणी में रखा गया है। ऐसी स्थिति में जब आपके शहर में पक्षी व्यापार बढ़ता जा रहा है, आपके समक्ष दो खुले विकल्प हैं, पहला निकटवर्ती थाने में जाकर प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) दर्ज कराना और किसी वरिष्ठ पुलिस अधिकारी की सहायता से ऐसे व्यक्ति को पकड़ना। दूसरा सीआरपीसी की धारा 43 के आधार पर नागरिकों का एक समूह बनाकर स्वयं ऐसे पक्षी-विक्रेता को पकड़ना और उस अपराधी को स्थानीय पुलिस के हवाले कर देना। सीआरपीसी की धारा 43 के अंतर्गत ' सिटिजन अरेस्ट' का प्रावधान है, जिसमें नागरिक स्वयं ऐसे अपराधी को गिरफ्तार कर सकते हैं, जिसने संज्ञेय अपराध किया हो। पक्षियों का शिकार अर्थात उन्हें पकड़ना, बंद करना और बेचना या मारना संज्ञेय अपराध है।

कड़ी पत्ता सिर्फ स्वाद के लिये ही नहीं स्वास्थ्य के लिये भी है उपयोगी

किभी सिर्फ दक्षिण भारतीय व्यंजनों में मिलाया जाने वाला कड़ी पत्ता अबसभी की पसंद है। और लोग अपने बगीचे में भी इसे लगा कर रखते हैं

कड़ी पत्ती को हम लोग हर डिश में एक विशेष स्वाद के रूप में लेते हैं, लेकिन स्वाद के अलावा कड़ी पत्ते के फाय़दे कुछ और भी हैं। विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन ई, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा के साथ पैक्ड, कड़ी पत्ता आपके दिल को बेहतर बनाने, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ बालों और त्वचा के रोगों को दूर रखने में मदद देता है।कढ़ी पत्ता में कई प्रकार के औषधीय गुण होते हैं, जो कि स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते हैं। इसे मीठी नीम के नाम से भी जाना जाता है। इसका प्रयोग ज्यादातर दक्षिणी भारत में किया जाता था लेकिन आजकल यह हर रसोई घर में मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है। मीठी नीम का प्रयोग भोजन का स्वाद बढ़ाने के लिए किया जाता है।कढ़ी पत्ता हमारे खाने के स्वाद को तो बढ़ाता ही है, साथ ही यह हमारे शरीर को कई प्रकार की बीमारियों से भी दूर रखने में मदद करता है। मीठी नीम में लोहा, कैल्शियम, फास्फोरस और कई प्रकार के विटामिन्स होते हैं जो कि शरीर को एनीमिया, हाई बीपी, मधुमेह आदि रोगों से बचाने में मदद करते हैं। इसके अलावा करी पत्ते में विटामिन इ2, इ6 और इ9 की भरपूर मात्रा होती है जिससे हमारे बाल काले, घने और मजबूत बनते हैं।

लीवर को क्षति से बचाता है :

अगर आप बहुत शराब पीते हैं और इसके कारण लीवर को नुकसान पहुँच रहा है तो आप अपने खाने में कड़ी पत्ता को शामिल करना न भूलें। एशियन जर्नल ऑफ फार्मासुटिकल एण्ड क्लीनिकल रिसर्च के अनुसार शरीर में जो ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस और टॉक्सिन्स बनता है वह लीवर को क्षति पहुँचाता है।

अगर आप कड़ी पत्ते का सेवन करते हैं तो उसमें जो विटामिन ए और सी होता है वह लीवर को अच्छी तरह से काम करने में मदद करता है। यह हमारे वजन को भी कम करने में सहायक होता है। करी पत्ते में मौजूद फाइबर की मात्रा, हमारे शरीर में जमा अतिरिक्त वसा और विषाक्त पदार्थो को बाहर निकालने में मदद करती है। हर दिन करी पत्ता खाने से वज़न घटता है और कोलेस्ट्रोल कम होता है। कड़ी पत्ते में हमारे शरीर के ब्लड कोलेस्ट्रॉल को कम करने का गुण होता है।

शायद इन्हीं गुणों की वजह से कड़ी पत्ते को दक्षिण भारत में प्रायः प्रत्येक व्यंजनों में डाला जाता रहा है।

जेब पर ज्यादा बोझ न पड़ने की वजह से ज्यादतर भारतीय परिवारों की पसंद है हानिकारक ब्रायलर मीट

ब्रायलर चिकेन नहीं बल्कि एंटीबायोटिक दवाइयों भरी खतरनाक थाली खा रहे हैं।

भारत में एक तिहाई जनसंख्या शाकाहारी है और वहीं कई जो मांसाहारी लोग हैं, वे ज्यादतर चिकन खाना ज्यादा पसंद करते हैं। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, चिकन की खपत 1985 के बाद से अब तक 17 गुना बढ़ गई है। इसकी रिपोर्ट के अनुसार यह बात सामने आई है कि ब्रायलर कंपनियां मुर्गी पालन करने वाले किसानों को चारे में एंटीबायोटिक्स मिला कर देती हैं, जिससे मुर्गियां तेजी से बड़ी हो जाती हैं और साइज में दोगुनी दिखने लगती हैं। फिर बाद में जब उनका इस्तमाल करना होता है, तब वे उन मुर्गियों को किसानों से वापस खरीद लेती हैं।

लेकिन क्या आप जानते हैं जिस चिकन को आप मजे. ले कर खाते हैं, वह आपकी सेहत पर बितना बुरा असर डालता है। एंटीबायोटिक मिले चिकन को खाने से शरीर की इन दवाओं के अवशेष चले जाते हैं और वे उन दवाओं की ताकत घटा देते हैं। फिर जब भी हम बीमार पड़ते हैं और एंटीबायोटिक का सेवन

करते हैं, तब हमें यह दवाइयां बेअसर लगने लगती हैं क्योंकि यह हमें पूरी तरह से ठीक नहीं करतीं या फिर हम कई दिनों तक बीमारी की हालत में पड़े रहते हैं।हमारे शरीर के लिये सारी एंटीबायोटिक दवाएं बेसर होने लगती हैं।

इन्हें खिलाई जाती है एंटीबायोटिक

मुर्गीपालन उद्योग अपने मुनाफे के लिये यह धंधा बिना किसी डर के चला रहा है। आइये जानते हैं एंटीबायोटिक मिले चिकन खाने से आपकी सेहत पर क्या असर पड़ सकता है। चिकन को खिलाई जाने वाली एंटीबायोटिक, मनुष्यों के लिये बनाई गई दवाई है। जिसको खा कर वह आकार में बड़ी हो जाती हैं और कम चारा खाने लगती हैं।

ग्रोथ हार्मोन किया जाता है इस्तमाल

हो सकता है कि जब भी आप चिकन खरीदने जाते हों, तो आपको वहां मोटी-मोटी मुर्गियां पिंजडे.में रखी हुई दिखाई देती हों। ऐसा इसलिये क्योंकि इन्हें हार्मोन के इंजेक्शन लगाए जाते हैं, जिसका मांस खाने के बाद हमारे शरीर में ग्रोथ हार्मोन जाता है और इसका हमारे शरीर पर बुरा असर पड़ता है।चिकन को Roxarsone नामक दवा दिया जाता है इसे खिलाने से चिकन का वजन बड़ी तेजी से बढ़ता है। 2011 में इस दवाई पर फूड एंड ड्रग एडमिनिस्-ट्रेशन द्वारा बैन लगा दिया गया था, लेकिन कई मुर्गी पालन विभाग आज भी इस दवा का प्रयोग करते हैं।

चिकन में पाया जाता है जानलेवा आर्सेनिक

ब्रायलर मुर्गियों में एक जहरील धातु आर्सेनिक भी पाया जाता है। यह मनुष्य के लिए बेहद जहरीला है। मुर्गियों में आर्सेनिक हार्मोन,एंटीबायोटिक दवाओं और अन्य दवाओं के उपयोग से आता है। मुर्गी पालन विभाग वाले मुर्गियों के उन बच्चों को तुरंत ही मार देते हैं, जो अंडे का उत्पादन नहीं कर सकते।

यदि आप वास्तव में चिकन खाना बेहद पसंद करते हैं तो मार्केट से सोच समझकर चिकन खरीदें। देशी-चिकन या प्राकृतिक रुप से बड़ा किया गया है, वो ब्रॉयलर चिकन की तुलना में बेहतर होते हैं।उन्हें किसी प्रकार का वैक्सिन या दवा देकर बड़ा नही किया जाता उन्हें खाना सुरक्षित होता है।

विष्णुगढ के मैकेनिक रमेश करमाली ने कबाड़ से किया खेत जोतने का जुगाड़

खेत जोतने के लिये बैल नहीं थे स्कूटर के पुराने इंजन से ही बना लिया जुताई मशीन

एक कहावत है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है, विष्णुगढ़ के उच्चघाना निवासी रमेश करमाली ने इस कहावत को सच कर दिखाया है। उसके छोटे भाई ने दो भैंस बेच दी तो उसके बाद रमेश को खेती के लिए परेशानी होने लगी और उसे खेती के लिए दूसरों से बैल मांगना पड़ता था।अनपढ़ रमेश ने महज आठ हजार रुपये जुगाड़ कर खेती शुरू की और साथ ही पावर टीलर बनाकर खेती के लिए बैल और भैंसों का झंझट भी दूर कर दिया। उसने यह चमत्कार कबाड़ में फेंके उस स्कूटर के इंजन से किया जिसे किसी ने उसे तीन हजार रुपये में बेच दिया था। रमेश पेशे से मोटर मैकेनिक था तो उसने इसमें थोड़ा बदलाव किया और फिर घर में टीलर तैयार कर खेतों की जुताई शुरू कर दी।और आज रमेश का पावर टीलर दस गुणा कम दर पर खेतों की जुताई कर रहा है। दस कट्ठा जमीन अर्थात पांच घंटे की भरपूर जुताई इस मशीन से सिर्फ ढाई लीटर पेट्रेल में की जा सकती है। रमेश की यह मशीन पूरे गांव के लिए प्रेरणादायी बन गई है।रमेश तीन साल की उम्र में पिता के साथ पुणे चला गया। पिता मजदूरी करते थे, वह भी 90 -साल की उम्र में। 1995 में उसे बजाज शोरूम में काम पर लगा दिया गया। 2005-6 में उसे पुणे में ही बजाज कंपनी में प्रशिक्षण पाने का मौका मिला। वहां बजाज के दोपहिया वाहन की सेल्फ की गड़बड़ी ठीक करने पर उसको पुरुस्कार

दिया गया था।नौकरी का भी ऑफर हुआ लेकिन पढ़ा-लिखा नहीं होने के कारण उसे नौकरी नहीं मिली। वह वापस अपने गांव आ गया और ऑन काल मोटरसाइकिल रिपेयिरंग का काम करता है। उसके छोटे भाई द्वारा खेती के लिए दो भैंस बेच देने पर रमेश परेशान था. इसीका सोचते हुए उस-ाके दिमाग में पोर्टेबल पावर टीलर बनाने की एक तरकीब आई।इसके लिए सबसे पहले 20 इंच बाय 41 इंच का चेचिस बनाया. अब इंजन और हैंडल की जरूरत पूरी करने के लिए कबाड़ में तीन हजार रुपये में मिले स्कूटर का इंजन लगा दिया. गेयर बॉक्स, हैंडल और दोनों चक्कों को निकाल कर बनाए उस चेचिस में फिट कर दिया. बाद में उसे स्टार्ट कर चला कर देखने पर उसके मुताबिक पावर टीलर सही निकला।

भारतीय नस्ल के गायों के दूध में है औषधीय गुण

एक शोधपूर्ण सच्चाईः ब्राजील देश ने हमारी देसी गायों का आयात कर अब तक 65 लाख गायों की संख्या कर ली है और इससे भी दोगुनी भारतीय देसी नस्ल की गायें उन लोंगो ने दूसरे देशों में निर्यात की है !

उन लोगों ने हृदय से इन गौवंश (सांडो सहित) की सेवा कर आज औसत में एक गाय से दिनभर में करीब 40 लीटर दूध पाने की शानदार स्थिति बना ली ।

ब्राजील इन भारतीय देसी गायों के दूध से पाउडर बना कर ऑस्ट्रेलिया, डैनमार्क को निर्यात करता है ! जबकि डैनमार्क जैसे देश में आदमी से अधिक वहाँ उनके देश की गाय हैं लेकिन वो अपनी गायों का दूध नहीं पीते ! वहां ब्राजील से आने वाला भारतीय नस्ल की गायों का दूध,और दूध पाउडर का ही उपयोग किया जाता हैं।डेनमार्क में ही नहीं आस्ट्रेलिया और आस पास के देशों में भी ब्राजील से आने वाले भारतीय नस्ल की गायों के दूध का उपयोग किया जाता है,और तो और ऑस्ट्रेलिया, डैनमार्क आदि देश अपनी जर्सी होलस्टीन युवान (जिन्हें हम गाय कहते नहीं थकते) के दूध से पाउडर निकाल कर हमारे देश भारत को भेजता है और हम बड़े शौक से इस जहर का उपयोग करते हैं जबकि इस पाउ-डर को ऑस्ट्रेलिया में उपयोग में लाने पर कड़ा प्रतिबन्ध है वे सिर्फ ब्राजील के दूध पाउडर को ही उपयोग में लाते हैं !

क्यों ? क्योंकि ऑस्ट्रेलिया, डैनमार्क आदि देशो की जर्सी गायों के दूध से डायबिटीज़, कैंसर जैसी भयंकर बीमारी फैलती है !जबकि ब्राजील से आने वाला भारतीय गायो का दूध इन बीमारियों को खत्म करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है आज हमारा भारत डायबिटीज़ व कैंसर की बीमारी की विश्व राजधानी बनता जा रहा है ! भारत की प्रत्येक डेयरी में हुए सम्पूर्ण दूध में से फेट (क्रीम-मक्खन) निकालकर उसमे इस आयातित दूषित ऑस्ट्रेलियन, डैनमार्क दूध पाउ-डर को मिलाकर प्रोसेस किया जहर थैलियों के माध्यम से हमारी रसोई तक पहुंचाया जाता है !

ये कैसा दुष्चक्र है !!!! भारत की देसी गाय ब्राजील में वहाँ से दूध,दूध पाउडर आस्ट्रेलिया और डेनमार्क में और ऑस्ट्रेलिया डेनमार्क का दूषित दूध पाउडर भारत में और फिर होता है दवाइयों का आयात !

भारतीय देशी गायों के दूध में औषधीय गुण पाये गये हैं, जो कैंसर, रक्तचाप, मधुमेह तक को नियंत्रित करता है। वहीं विदेशी होलस्टिन नस्ल की गायों में कैंसरकारक तत्व तक पाये गये हैं। डेनमार्क, ब्राजील, आस्ट्रेलिया जैसे देशों ने यह जान कर अपने यहां होलस्टिन गायों के दूध उत्पाद को बैन कर दिया है। अब ये देश भारतीय नस्ल की गायों का दूग्ध उत्पाद आयात कर रहे हैं और अपने गायों का प्रतिबंधित दुग्ध चूर्ण हमें निर्यात कर रहे हैं।

हॉलस्टिन गायों के दुध और उसके उत्पाद देशवासियों का स्वास्थ्य खराब कर रहे हैं।

सन कम्युनिकेशन द्वारा अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2 टीवीएस गली रातू रोड, रांची-834001(झारखंड) से प्रकाशित एवं मैसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड के लिये,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित। प्रकाशक सह कार्यकारी संपादक : मनोरंजन सिंह, संपादकीय सलाहकारःमुकेश रंजन सिंह, प्रधान संपादक : अभिषेक सिंह, प्रबंध संपादक : डॉ. मंगला प्रसाद मिश्र, संपादकः मनोज कुमार शर्मा, उपसंपादक : महबूब आलम, प्रसार प्रबंधक : इंतेखाब अहमद। आर.एन.आइ. नंबर : JHAHIN00962.
email:greenrevolt2019@gmail.com. Ph.8825374626, 8539978825. इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन ही होंगे।

यहां मनाते हैं ट्री रक्षा बंधन

राजकिशोर आर्या

सावन पूर्णिमा के दिन जहां बहनें भाइयों को राखी बांधती हैं और भाई अपने बहन की रक्षा का करने की शपथ लेते हैं। वहीं झारखंड के सिमडेगा, रांची, हजारीबाग में ट्री रक्षा बंधन मनाने का एक अभियान चलाया जा रहा है। सालों पहले हजारीबाग दूधमटिया के महादेव महतो ने इस अभियान की शुरूआत की। दरअसल महादेव महतो वनों को बचाने लिये एक संकल्पित शखिसयत हैं। उन्होंनें ग्रामीणों को इस बात के लिये प्रेरित किया कि, जंगलों की कटाई से परहेज करना है और पेड़ों की रक्षा के लिये उसमें एक धागा बांधना है। महादेव महतो के इस प्रयास में उनके सहयोगी बने सुरेन्द्र सिंह। इन दोनों के इस प्रयास से सैकड़ो एकड़ भूमि में वन संरक्षित किया जा सका।

महादेव महतो के वन संरक्षण के इस प्रयास पर पत्रकारिता विभाग रांची विवि में पढते हुये हमने एक डॉक्यूमेंट्री फेस्टिविटी आफ ग्रीनवूड बनाई जिसे यूजीसी ने विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्रदान किया

महादेव महतों के वन संरक्षण के इस संकल्प यात्रा में लोग जुड़ते गये और वन संरक्षण का ये अभियान हजारीबाग के दूधमटिया से निकल कर रांची सिमडेगा और अन्य जिलों में फैलते चला गया। आज रांची के ओरमांझी स्थित बनलोटवा गांव में सैकड़ो एकड़ वनों का संरक्षण ट्री रक्षा बंधन के माध्यम से ग्रामीणों ने कर रखा है।

मकर संक्राति के दिन मनाते हैं रक्षा बंधन

ओरमांझी के बनलोटवा गांव में मकर संक्रांति के दिन ग्रामीण विधि विधान से पूजा करते हैं और वृक्षों में रक्षा सुत्र बांधते हैं। गांव में किसी को भी पेड़ काटने की मनाही है और ऐसा करने पर उसे आर्थिक दंड भी दिया जाता है। जो पेड़ खुद गिर गये, सूख गये सिर्फ उन्हीं का उपयोग किया जा सकता है। महादेव महतो के चलाये गये इस अभियान के कारण ही आज बनलोटवा में तकरीबन डेढ सौ एकड़ में हरे भरे जंगल संरक्षित हैं। सिमडेगा में भी यह अभियान चलाया जा रहा है।

आचार्य श्री ने लिया 50 हजार पौधे लगाने का संकल्प

जो जीवन भर अमृत देवे कैसे भूले वा जहान।
आतमघाती मानव बन जाये कौन करे कल्याण।।

इन्हीं पंक्तियों के साथ अपने विचार व्यक्त करते हुये श्री सुदर्शन जी महाराज ने विश्व पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिये 50 हजार पौधे लगाने का संकल्प लिया है। इसके लिये इन्होंने अपने गृहजिले सीतामढी में जाकर पौधारोपन के कार्य को आगे बढाया है। इन्होंने दस एकड़ जमीन में पौधारोपन का बीड़ा उठाया है और इसका शुभारंभ कर दिया है। इसके लिये सबसे पहले स्कूल परिसर में सैकड़ो पौधे लगाये गये हैं।स्कूल के छात्रों ने भी पौधे लगाये और उन्हें सुरक्षित रखने का संकल्प किया।आचार्य श्री सुदर्शन जी महाराज ने कहा कि, पौधा लगाना हवन एवं पूजा करने के बराबर एक पावन कार्य है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी गर्म हो रही है,प्रदूषित हो रही है। हरियाली से जुड़ कर ही अब शांत सुकून भरा जीवन प्राप्त हो सकेगा।

नीली क्रांति : झारखंड को मत्स्य पालन में आत्म निर्भर बनाया

रांची : याद किजिये क्या पहले रांची में जिंदा मछली खरीदना संभव था? कुछ सालों पहले तक रांची में मछली आंध्र प्रदेश से ट्रकों में भर कर लायी जाती थी। से मछलियां बर्फ में डाल कर यहां आती थीं, और मछली विक्रेता इन्हें बर्फ में रख कर कई कई दिनों तक बेचा करते थे। यह आपके स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ भी था। बाद में इन मछलियों में फॉर्मलीन नामक रसायन भी डाला जाने लगा जो कैंसरकारक है।

लेकिन हाल के वर्षों में झारखंड मछली उत्पादन में आत्मनिर्भर हो चुका है। यहां के केज कल्चर से मछली पालन और उत्पादन में क्रांति आ गयी।अब जगह जगह जिंदा मछली बेचने वाले दूकानदार मिल जायेंगे।

यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि जिस झारखंड में पहले मछलियां आंध्रप्रदेश से आती थीं अब वहां से मछलीपालन सीखने के लिये लोग झारखंड आ रहे हैं और यहां केज कल्चर से मछली उत्पउदन के तौर तरीके सीख रहे हैं।झारखंड में तालाबों और बड़े बड़े डैम सर्वत्र हैं, और यही बड़ा कारण रहा जिसके कारण राज्य मछली उत्पादन में आत्म निर्भर बना।

पिछले दिनों कांके डैम के सरोवर नगर में अमृतेश पाठक के प्रयास से वहां के लोगों ने मिल कर सैकड़ो नीम के पेड़ लगाये। इन पेड़ों की बांस और नेट के द्वारा फेंसिंग भी की गयी। अच्छी बात ये है कि लोगों ने पेड़ लगा कर अपने कर्त्व्य की इतिश्री नहीं कर ली, बल्कि समय समय पर जाकर इन पेड़ों की सुध भी लेते रहते हैं। उम्मीद है इनमें से ज्यादतर पौधे बच जायेंगे। और कांके डैम का यह इलाका हरा भरा हो जायेगा।

डॉग रखना सिर्फ कुछ दिनों का शौक नहीं बल्कि एक जिम्मेवारी भी है

बदलते वक्त के साथ पालतू जानवर घर के मेंबर बन गए हैं। आज कल तो हर घर में कोई न कोई पेट देखने को मिल ही जाता है। आप पूरे दिन की थकान के बाद जब घर लौटेंगे तो घर में आपका प्यारा डॉगी आप से खेलने के लिए तैयार होगा और उसे देखकर आपकी सारी थकान गायब हो जाएगी।

अगर आपके भी घर में एक मासूम सा कुत्ता या बिल्ली है तो इनका ख्याल रखें और इन जरुरी बातों पर ध्यान दें।

1 ग्रूमिंग: अगर आपके पालतू जानवर को ग्रूमिंग की जरुरत है तो ही करें। और अगर उन्हें नहीं पसंद तो बिलकुल ना करें। जरुरी नहीं हर जानवर को ग्रूमिंग पसंद हो लेकिन उन्हें कभी कभी ग्रूमिंग की जरुरत पड़ती ही है, क्योंकि उनके बाल कई बार गंदे हो जाते हैं। ग्रूमिंग यानि उनकी त्वचा में थोड़ा तेल लगाना।

2. खाना खिलाएं: उन्हें सही सही मात्रा में खाना दें। ना बहुत ज्यादा, ना बहुत कम। कम देंगे तो भूख की वजह से वो आपके झूठे चबाने लगेगा और कुपोषण का भी शिकार हो सकता है। साथ ही अगर आप उसे ज्यादा खाना देंगे तो उसे उल्टियाँ, पेट में दर्द और मोटापे का शिकार भी होसकता है। और एक बात आपको यह भी पता होना चाहिए कि वो कब भूखें हैं और कब सिर्फ वो आपका ध्यान खीचने के लिए आपको परेशान कर रहे हैं। जैसे जब घोड़ा भूखा होगा तो खिड़की से मुँह बाहर कर के अपना चारा खायेगा और अपनी तरफ ध्यान खीचने की कोशिश करेगा।

3 बर्तन साफ़ करें : क्या आप पूरे एक ही महीने एक प्लेट में खाना खाएंगे, या एक गिलास, कप या मग कुछ भी पींगें। नहीं ना। तो फिर महीने में एक बार अपने पालतू जानवर के बर्तन जरूर साफ़ करें। 4. अपने पालतू जानवरों पर ध्यान दीजिये वैसे तो हर जानवर अपने ऊपर ध्यान खीचने की कोशिश करता है लेकिन कुत्ते कुछ ज्यादा ही करते हैं। जैसे अगर आप उन से हाय कहेंगे या कैसे हो वो नहीं समझ सकते हैं लेकिन इससे उन्हें लगता है कि आप उन्हें देख रहें हैं।

5. अपने कुत्ते को टहलाने ले जाएं : कुत्तों के लिए स्वस्थ रहना बहुत जरुरी हैं इसके लिए उन्हें भी एक्सर्साइज़ की जरुरत है जिससे वो शारीरिक और मानसिक रूप से, स्वस्थ रहें। कुत्तों को घर में, केनल में एक जगह जंजीर से बंधा रहना पसंद नहीं है। उन्हें भी बाहर घूमना पसंद है साथ उससे वो दूसरे कुत्तों से भी मिल पाएंगे। अगर आपने कुत्ता नहीं पाला है या आपके पास कोई और जानवर है तो उसके लिए एक्सर्साइज़ का और कोई तरीका ढूढ़ें।

6 फिजिकल कांटेक्ट : अपने पालतू जानवर से फिजिकल कांटेक्ट जरूर रखें इससे उनके करीब जाने का मौका मिलता है। और वो आपके और करीब आजाते हैं। अपने पेट के साथ खेले, घास में उसके साथ बैठे और उसके साथ पागलपन जैसी हरकते करें।

7 जानवर को मारे नहीं :अपने पालतू जानवर के साथ ऐसा कुछ ना करें जिससे उसे चोट आये। क्योंकि वो कमज़ोर होते हैं और इसकी वजह से वो आपको ना पसंद भी कर सकते हैं।

8 उसे डॉक्टर के पास ले जाएं :अपने पालतू जानवर को डॉक्टर के पास जरूर ले जाएँ। हो सकता है यह उसे पसंद ना आये और उसे परेशानी भी हो लेकिन कुछ महीनो में एक बार उसे डॉक्टर के पास जरूर ले जाएँ। वैक्सिन एवं अन्य दवायें दिलाने के लिये समय समय पर डॉक्टर के पास उसे ले जायें। ये पूरी तरह से जिम्मेवारी का काम है।

फोटो न्यूज

बायीं ओर रांची के पिस्का मोड़ से आगे ओटीसी मैदान के पास की सड़क की तस्वीर है।हाल तक यहां दोनो ओर घने विशाल वृक्षों की कतार थी। यहां से गुजरते वक्त एक सुकून और ठंढक का अहसास होता था। अब ये सारे वृक्ष सड़क चौड़ीकरण की बलि चढ गये। अब यहां चौड़ी सड़क है , पर सुकून नहीं। यहां वर्षों से सड़क किनारे दूकान लगाने वाले भी मायूसी से कहते हैं कि अब ये जगह बिल्कुल ही उजाड़ हो गया।

दायीं ओर की तस्वीर गोवा के किसी जगह की है। तस्वीर देख कर ही सुकून का अहसास होता है। एक वृक्ष को घना विशालकाय होने में सालों लग जाते हैं और हम अपनी सुविधा के लिये उसे पल भर में काट डालते हैं। क्या कोई बीच का रास्ता नहीं निकल सकता?